मैं

'मैं' आदि से अन्त तक हूँ।

मैं आइने में दिखने वाली चीज़ हूँ।
यही मूलाधार का 'मैं' हूँ।

मैं आपका बेटा हूँ।
मैं आपकी बेटी हूँ।
यह सब स्वाधिष्ठान का 'मैं' हूँ।

मैं इस कुल का मुखिया हूँ।
मैं ज़मीदार हूँ।
मैं योग्य हूँ, तुम अयोग्य हो।
यह सब मणिपुर का 'मैं' हूँ।

मैं का मतलब मुझे नहीं मालूम।
मैं क्या हूँ? यह अनाहत का 'मैं' हूँ।
अहं ब्रह्मास्मि – इस सच को पहली बार सुनने वाला अनाहत का 'मैं' हूँ।

अहं ब्रह्मास्मि – इसे स्वानुभव से जानने का प्रयास करने वाला मैं विशुद्ध का 'मैं' हूँ।

ध्यान साधना के द्वारा दिव्यचक्षु को प्राप्त करके दिंव्यचक्षु में ही हूँ और दिव्यचक्षु के रूप में रहने वाला असली मैं हूँ, वही आज्ञा का 'मैं' हूँ।

वास्तव में असली मैं से पूरा ही मैं हूँ और मैं ही पूरा हूँ- यह जानने वाला मैं ही संपूर्ण 'मैं' हूँ।
वही सहस्रार का 'मैं' हूँ।